(i) अमस योग :-

ग्रीष्म ऋतु के आगमन पर सूर्य का तेज बढने लगता है, उस तपन और तेज के कारण धरती से पानी सुखने लगता है। पानी सुखने के कारण, ताल, तलैया, कुंए, बावड़ी आदि में पानी कम होने लगता है धरती का पानी सूखने के कारण उचित पैदावार न होकर धरती फटने लगती है,

मिट्टी की पकड़ कमजोर हो जाने के कारण गर्म हवाओं के साथ मिट्टी उड़ने लगती है, तपन लू को धारण कर प्रकृति के रूप का और ज्यादा विकराल रूप बना देती है।

ऐसी तेज तपन के कारण पेड़-पौधे जुलसने लगते है। ऐसी स्थिति में पेड़-ठूंठ की तरह दिखाई देते है। और प्रकृति पर

Scanned by CamScanner

हरियाली नहीं रहती है। ग्रीष्म ऋतु के कारण, पक्षियों का अपना सुख होता है, पक्षियों को कहीं खाने पीने के लिए दाना - पानी नहीं मिलता है। इसके लिए उन्हें दुर-दुर तक भटकना पड़ता है लेकिन फिर भी उनकी पूर्ति नहीं हो पाती एवं आश्रय ओर विश्राम के लिए ~~छाया~~ छाया भी नहीं मिल पाती है ऐसे में पक्षी बहुत कष्ट पाते है, पक्षियों के पश्चात पशुओं को भी ऐसी ही करुण अवस्था में खाने पीने के लिए दुर-दुर तक भटकना पड़ता है।

मानव जीवन के लिए भी अपने कष्ट और दुख होता है, अत्यधिक गर्मी के कारण पानी नहीं होने से खेती नही हो पाती इसलिए किसान खेती का काम नहीं कर पाता और वह निठल्ला हो जाता है, बहुत कृषक लोग गर्मी के तपन के कारण परिवार सहित अपने घरों में बैठकर हाथों से रस्सी बनाते रहते है, और वे इस प्रकार गर्मी के समय का ~~व्यतीत~~ व्यतीत करते है, महिलाएं खुश होकर अपने परिवार व पशुओं के भरण ~~के~~ पोषण करने के लिए बहुत दुर जाकर पानी लाती है ऐसे तपन के समय में वह भोजन बनाती है, और परिवार को भोजन करवाती है, व अपने बच्चों का ध्यान रखती है बच्चे जहाँ गर्मी ऋतु से परेशान होकर अपनी माँ के आँचल में आते है तो माँ आन्चल से हवा कर पसीने को दूर करती है ऐसे में बच्चों के छोटी - छोटी अलाइयां (घमौरी) हो जाती है इसी कारण बच्चे और अधिक परेशान होते है

इस कारण बच्चे और अधिक परेशान हो जाते है एवं खेल भी नहीं पाते है पैर जलने लगते है और अधिक पैर जलने के कारण वे पानी में पाँव रखकर शीतलता का अनुभव करते है।

फागुन माह के पश्चात ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ हो जाती है और इस ऋतु की प्रचण्डता के बाद जेठ माह आता है जिसके कारण मानव, पशु-पक्षियों और प्रकृति पर देखा जा सकता है ग्रीष्म ऋतु के कारण पानी वाष्प बनकर उड़ने लगता है कुएँ, तालाब, नदियाँ सुख जाती है।

प्यासी धरती फटने लगती है पेड़-पौधे सुखकर कुढ़ हो जाते है, तेज हवाओं के बवंडर के कारण वातावरण गर्म और तपन देने वाला हो जाता है -चारो तरफ विरानी सा जाती है।

तब ऐसा लगता है कि मानो प्रकृति का बुढापा आ गया है पशु-पक्षियों को न तो भोजन मिलता है न ही पानी एवं नही आश्रय मिलता है जिसके कारण वे अपने प्राण त्याग देते है, इसीलिए कंकाल के रूप में इधर-उधर बिखरे रहते है, गर्मी और लू के कारण बुढे लोग घर से बाहर नहीं निकल पाते है इस ग्रीष्म ऋतु के कारण ग्रस्त व दुःखी होकर मानव, पशु-पक्षी, आसमान को देखकर, काली बादली का इन्तजार करते है। कि कब काली घटाएँ उमड़ घुमड़ कर बादलों को बरसाएगी। और कब हमें इस ग्रीष्म ऋतु से मुक्त करेगी।

Scanned by CamScanner